अरुण कमल के काव्य में स्थानीयता के स्वर

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा,
हिन्दी विभाग से
पी–एच. डी. हिन्दी की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध की
रूपरेखा
2014

निर्देशिका :
डॉ. (श्रीमती) नमस्या
असि. प्रो., हिन्दी विभाग,
कला संकाय

शोधछात्रा :
मोनिका वर्मा
हिन्दी विभाग,
कला संकाय

विभागाध्यक्ष :
प्रो. (श्रीमती) शर्मिला सक्सेना
हिन्दी विभाग, कला संकाय

संकाय प्रमुख :
प्रो. (श्रीमती) उर्मिला आनन्द
कला संकाय

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा – 282005

अरुण कमल के काव्य में स्थानीयता के स्वर

विषय प्रवेश :–

अरुण कमल जी की गणना समकालीन कवियों की पहली पंक्ति में की जाती है। प्रमुख समकालीन कवियों में से एक अरुण कमल जी का जन्म 15 फरवरी, 1954, नासरीगंज (रोहतास) बिहार में हुआ था।

अरुण कमल के पिता तबादले वाली नौकरी में थे इसलिए किसी एक जगह पर उनकी स्कूली शिक्षा नहीं हुई। उनका पहला स्कूल मौलवी साहब का मक़तब था, वहाँ से ही उर्दू भाषा के प्रति उनका लगाव होने लगा। बाद में उनकी पढ़ाई एक बुनियादी विद्यालय में हुई और आज भी वहाँ की मधुर यादें उनके मन में विद्यमान हैं।

बचपन की कुछ स्मृतियाँ होती हैं जो ज़िन्दगी भर व्यक्ति के ज़हन में रहती हैं। अरुण कमल भी रूप, रस, गन्ध, ध्वनि एवं स्पर्शवाली अपने बचपन की उन अनमोल स्मृतियों पर भरोसा रखते हैं। गोधूली में गाय के रंभाने की आवाज, मंदिर की घंटी की आवाज, जाड़े की रात में सियारों की आवाज आदि बचपन की वे स्मृतियाँ हैं, जो आज भी कवि को भुलाए नहीं भूलतीं हैं। इस प्रकार बूढ़े लोगों का भजन, पड़ोस की औरतों द्वारा गाए सोहर, झूमर, बिरहा, और शाम को धान रोपकर लौटतीं रोपनियों के गीत आदि की यादें भी कवि को उन खूबसूरत दिनों की ओर वापस ले जाती हैं। अतः अरुण कमल की कविताओं में लोक एवं ठेठ स्थानीयता का जो अंश हम देख सकते हैं उनके पीछे कवि के बचपन की इन यादों का स्थान सर्वोपरि है। धान के खेतों पर बैठे सफेद बगुलों की पंक्ति, हरी घास पर लाल मखमली इन्द्रगोप कीट, कटते खीरे की गन्ध, हींग की गंध इन सबकी यादें भी आज उनके मन–मस्तिष्क में तैरती हैं। अतः उनकी कविताओं में स्थानीय रंग ही मुख्य कारण है जो उनकी सभी समकालीन कवियों से अलग पहचान बनाये हुए है। इन वास्तविक अनुभूतियों एवं मधुर स्मृतियों की अनुगूँज होने के कारण अरुण कमल की कविताएँ अन्य समकालीन कवियों की रचनाओं के बीच अपना अलग ही रूप धारण किए हुए हैं।

रचना या कवि के सृजन कर्म को उनका कृतित्व कहा जाता है जो लेखक की मौलिकता एवं सृजन शक्ति पर निर्भर करता है। प्रत्येक संवेदनशील रचनाकार अपने समकालीन जीवन के

यथार्थ चित्रण को अपनी रचनाओं में दर्शाता है एवं नये विषयों को जोड़ता है, उसकी विसंगतियों से टकराता हुआ आगे बढ़ता है। नये मूल्यों के सृजन साहित्य से समाज में अपना अस्तित्व बनाता है। विभिन्न मनःस्थितियों में अपनी संवेदना को सम्प्रेषित करने के लिए बहुविध साहित्य–विधाओं का सृजन करता है।

अरुण कमल जी प्रमुखतः कवि, आलोचक, निबंधकार के रूप में पहचाने जाते हैं। उनकी निम्न कृतियाँ हैं–

काव्य–संग्रह –

- अपनी केवल धार (2004, 2006),
- सबूत (1989, 1999),
- नये इलाके में (1996, 1999, 2007),
- पुतली में संसार (2004),
- मैं वो शंख महाशंख (2012),
- कवि ने कहा (2012),
- प्रतिनिधि कविताएँ (2013),
- नई सदी के लिए चयन : पचास कविताएँ (2011)।

निबन्ध–संग्रह –

- कविता और समय (2002),
- गोलमेज (2009),
- कथोपकथन (2010)।

पत्रिका –

- आलोचना (त्रैमासिक)।

अनुवाद –

- ‘वियतनामी कवि तो हूँ’ की कविताओं तथा टिप्पणियों की एक पुस्तिका का अनुवाद,
- ‘मायकोव्स्की की आत्मकथा’ का अनुवाद,
- अंग्रेजी में ‘वॉयसेज’ नाम से भारतीय युवा कविता के अनुवादों की किताब प्रकाशित।

अन्य –

- ‘नवभारत टाइम्स’ (पटना) के लिए ‘जन–गण–मन’ स्तम्भ में सामयिक टिप्पणियाँ लिखीं।
- ‘अनुस्वार’ नाम से एक अनुवाद स्तम्भ ‘प्रभात खबर’ (राँची) में तथा इंटरनेट पत्रिका ‘लिटरेट वर्ल्ड’ के लिए भी स्तम्भ–लेखन किया।

अरुण कमल के व्यक्तित्व का विकास पटना में आकर अधिक तेज होने लगा। सन् 1962 में मैट्रिक के बाद वे पटना आए, वहाँ उनका मिलन कवि रामकृष्ण पाण्डे से हुआ। रामकृष्ण जी के कवि व्यक्तित्व का प्रभाव अरुण कमल पर पड़ा। सन् 1970 में अरुण कमल की पहली कविता रामकृष्ण जी के द्वारा निकाली साइक्लोस्टाइल्ड पत्रिका ‘प्रक्रिया’ में प्रकाशित हुई। फिर रामकृष्ण पाण्डे के साथ ‘प्रगतिशील लेखक संघ’ की गोष्ठी में भाग लेने का अवसर मिला। वहाँ तो उन्हें नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, शिवचन्द शर्मा, हँसकुमार तिवारी, सुहैल अजीमाबादी, दिनकर आदि से मिलने का अवसर मिला। पटना में आलोक धन्वा और ज्ञानेन्द्रपति से भी उनकी भेंट हुई। इन सब के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का प्रभाव अरुण कमल पर पड़ता ही रहा। कबीर और तुलसी के बाद निराला, मुक्तिबोध, अज्ञेय और धूमिल ने अरुण कमल को प्रभावित किया। बीसवीं शताब्दी के सबसे महान कवि के रूप में वे निराला को मानते हैं। उनके सबसे प्रिय कवि भी निराला हैं। अरुण कमल ‘नये पत्ते’ को सबसे महान रचना मानते हैं। उनका प्रिय उपन्यास ‘कर्मभूमि’ है एवं उपन्यासकार प्रेमचन्द, यशपाल और अमृतलाल नागर हैं। फणीश्वर नाथ रेणु उनके प्रिय कथाकार हैं और ‘बहती गंगा’ कथा पुस्तक। समकालीन कवियों में वे राजेश जोशी को ‘करीबी दोस्त’ मानते हैं एवं मंगलेश डबराल, वीरेन्द्र जैन, उदय प्रकाश,

राजेन्द्र शर्मा, ध्रुव शुक्ल, मनमोहन, वीरेन डंगवाल, विजयकुमार, ज्ञानेन्द्रपति, अग्निशेखर, आलोक धन्वा, स्वप्निल श्रीवास्तव आदि के प्रति भी उनका विशेष लगाव है। इसके अलावा अंग्रेजी में 'शेक्सपियर' की रचनाओं को एवं उर्दू में 'गालिब' की कविताओं को भी वे सर्वश्रेष्ठ मानते हैं।

अरुण कमल अपने बचपन की यादों को इन सबसे महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इसलिए ही **अरुण कमल** ने कहा– **"जैसे–जैसे आपकी उम्र बढ़ती है, बहुत से लोग आपसे मिलते हैं। लेकिन एक कवि के जीवन का बचपन सबसे महत्त्वपूर्ण होता है। उसकी चिरसंचित अक्षय राशि और उसके बाद शुरू की युवावस्था के मित्र, वातावरण, अनुभव।"** अरुण कमल की कविताएँ उनके इस कथन की गवाही देती हैं अथवा उनके कवि व्यक्तित्व का मूलाधार स्वयं उनके ही बचपन के रंगीन चित्र हैं। पटना शहर से अरुण कमल जी का आत्मीय सम्बन्ध है। यद्यपि वे कई बार पटना से बाहर गये थे तब भी अन्त में वापस वहीं लौट आते हैं–

"इस बार भी लगता है यहीं रह जाऊँगा
हर बार सोचकर निकलता हूँ
कहीं दूर चला जाऊँगा
पर बारिश की शाम के धुएँ सा घुमड़ता
गिरता हूँ फिर उसी छप्पर पर जहाँ से उठा
बैठा रह जाता हूँ।"

इसका कारण है कि उनके जीवन की प्रत्येक दशा से पटना का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ है। वस्तुतः पटना की उनकी स्मृतियाँ जन्मभूमि से उनके लगाव को प्रस्तुत करती हैं। जन्मभूमि जिसकी स्वर्णिम स्मृतियाँ रह–रहकर कवि को बार बार अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

अपने विषयों की सादगी, भावव्यंजना की गहन अभिव्यक्ति और संप्रेषणीयता के कारण अरुण कमल की कविताएँ पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। उनकी कविता में उनका स्थानीय बोध, स्थानीय रंग उभर कर आता है। अनायास ही स्थानीयता का प्रयोग उनकी

कविता की संप्रेषणीयता को वर्धित करता है। अपने जन्म स्थान और उस स्थान के आस–पास के वातावरण को सटीक शब्दावली से प्रस्तुत करने की उनकी अभूतपूर्व क्षमता उनकी कविता की प्रभावोत्पादकता का सहज उदाहरण है।

विषय का अनावरण :–

अरुण कमल के साहित्य में स्थानीय शब्दावली का प्रयोग और अपने परिवेश को प्रस्तुत करने की क्षमता के कारण यह महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि हम उनके काव्य के इस गुण का व्यापक विश्लेषण करें। उनकी कविताओं के शब्द जिस वातावरण से आये हैं उस वातावरण को चित्र रूप में पाठक के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं जो न केवल उनके वर्णन की सहजता को सामने लाते हैं बल्कि उस शब्द के साथ उसके परिवेश, उसके स्थान को, उसके समाज, धर्म आदि व्यवस्था का भी खाका पाठक के सामने रखते हैं।

प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित पूर्ववर्ती कार्य प्रस्तुत विषय की विशेषताएँ :–

शोध–प्रबन्ध :–

– समकालीनता के सन्दर्भ में अरुण कमल की कविताएँ – राजेश कुमार पी.एन. – महात्मा गाँधी यूनिवर्सिटी – 2012

शोध–प्रबन्ध एम.फिल. :–

–अरुण कमल की कविताओं में प्रतिरोध के स्वर – चन्द्रकान्त सिंह – जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी – 2009

समीक्षात्मक पुस्तकें :–

– कविता की वापसी और अरुण कमल का काव्य – विधि शर्मा – अनामिका पब्लिकेशन्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स – जनवरी 1, 2005

– अज्ञेय से अरुण कमल तक – डॉ. सन्तोष तिवारी – भारतीय ग्रन्थ निकेतन – 1 जनवरी, 2005

<u>लेख–</u>

– **'अनबोलने में बोलता बहुत कुछ'** – कविता का तिर्यक – लीलाधर मंडलोई – मेघा बुक्स –प्रथम संस्करण 2003

– **'अरुण कमल : आपा अपनापा खोजती है कविता'** – कोठार से बीज – सोमदत्त – मेघा बुक्स – प्रथम संस्करण – 2003

– **बढ़ई, कुम्हार और कवि** – एकान्त श्रीवास्तव – किताबघर प्रकाशन – प्रथम संस्करण 2013

– **कविता की संगत** – विजय कुमार – आधार प्रकाशन – प्रथम संस्करण 1995

– **'अरुण कमल'** – सत्तरोत्तरी हिन्दी कविता (संवेदन, शिल्प और कवि), डॉ. मनोज सोनकर – प्रकाशन संस्थान – प्रथम संस्करण 1994

– **'कि सहसा एक ओर कुछ कौंधा सर्पमणि–सा'** – कविता का अर्थात् – परमानन्द श्रीवास्तव – वाणी प्रकाशन – प्रथम संस्करण 2008

– **'अरुण कमल का मूल स्वर करुणार्द्र और भय की भीतियों से भरा है'** – कुमार मुकुल – पाखी – 17 सितम्बर, 2013

– **'विचार विमर्श की अपनी गोलमेज'** – ओम निश्चल – गद्य कोश

– **'मैं कहता आँखिन देखी : अरुण कमल'** (निवेदिता से बातचीत) – समालोचन – अरुण देव

– **'कवि होकर जीना न जीने के बराबर है : अरुण कमल'** – कोलकाता, जागरण संवाददाता – रविवार, 11 मार्च 2012

– 'खबर घटना का एकांगी पाठ होता है' – विजय गौड़ – Google.com

– 'भोर के इन्तजार में एक गली' – गीताश्री – Google.com

अरुण कमल के काव्य के संबंध में विचार करना और उसमें भी उनके काव्य में निहित स्थानीयता को उजागर करना शोध का विषय है। स्थानीयता अर्थात् किसी स्थान विशेष से सम्बन्धित वह शब्द जो उस स्थान के परिवेश, उसके वातावरण, उसके रहन–सहन आदि का उद्घाटन करते हों। इस प्रकार जब हम अरुण कमल के काव्य की स्थानीयता पर विचार

करते हैं जो मूल्यतः उनकी अभिव्यक्ति के और अनुभूति के सूक्ष्म आयामों को भी विश्लेषित करते हैं। वस्तुतः शोध के परिप्रेक्ष्य से प्रस्तुत विषय की विशिष्टता यही है कि हम इसके द्वारा कवि के बहुआयामी व्यक्तित्व और प्रभावशाली कृतित्व का कारण सहित वर्णन एवं विश्लेषण करते हैं।

शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्य :–

आधुनिक समय के एक ऐसे कवि जिनकी कविताएँ सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि, संयत कला अनुशासन और आत्मीयता को रेखांकित करने में पूर्णतः सक्षम हों, उनकी कविताओं को शोध के द्वारा विश्लेषित करना एवं उन पर विचार करना शोध कार्य की सार्थकता को सिद्ध करता है। अरुण कमल ऐसे ही साहित्यकार हैं। अरुण कमल अपनी कविताओं में सादगी और ज़मीनी मिठास के कारण बहुप्रसिद्ध हैं उनकी कविताओं में स्थानीयता का रंग बहुत गहरा है जिसका विश्लेषण करना शोध की आवश्यकता है। उनकी कविताओं में स्थानीयता पर विचार करते हुए स्थानीयता के कारण उनकी कविताओं की प्रभावोत्पादकता पर विचार किया जाएगा। साधन रूप में प्रयुक्त स्थानीय शब्द साध्य भी हैं जो कविताओं के मूल में छिपी भावनाओं को, उनके पीछे छिपे मर्म को पूर्ण गहराई से व्यक्त करते हैं इस तथ्य को दृष्टि में रखते हुए रूपरेखा के अनुसार उनकी कविताओं की स्थानीयता को विश्लेषित किया जाएगा। कवि की भाषा, भाषा के विभिन्न अवयव आदि का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण करते हुए भाषा की सशक्तता, सार्थकता एवं सम्प्रेषणीयता पर पूर्ण विचार करने का उद्देश्य रहेगा। समीक्षात्मक, विश्लेषणात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा। न केवल पुस्तकें, पत्र, पत्रिकाएँ, संदर्भ ग्रन्थ आदि का अध्ययन किया जाएगा अपितु उनके समकालीन लेखकों से विचार विमर्श के साथ साक्षात्कार, प्रश्नावली आदि शोध प्रविधियों का समुचित प्रयोग करते हुए शोध को सार्थक बनाने का प्रयास किया जाएगा।

निर्देशिका :
डॉ. (श्रीमती) नमस्या
असि. प्रो., हिन्दी विभाग,
कला संकाय

शोधछात्रा :
मोनिका वर्मा
हिन्दी विभाग,
कला संकाय

अरुण कमल के काव्य में स्थानीयता के स्वर

विषय की प्रस्तावित रूपरेखा

प्रथम अध्याय :–

- विषय प्रवेश
- विषय का अनावरण
- प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित पूर्ववर्ती कार्य विवरण
- प्रस्तुत विषय की विशेषताएँ
- विषय का महत्त्व एवं उपयोगिता
- काव्य में स्थानीयता के स्वर की पहचान एवं महत्त्व
- शोध की दिशाएँ, उद्देश्य, सीमाएँ
- शोध प्रविधि, आँकड़े एवं तथ्य संग्रहण

द्वितीय अध्याय :– **हिन्दी काव्य में स्थानीयता के स्वर (1970 से अद्यतन)**

1. 'स्थानीय' शब्द की पहचान एवं विश्लेषण

2. स्थानीयता के आधारभूत तत्त्व

3. स्थानीयता की विशेषताएँ

4. हिन्दी काव्य में स्थानीयता के स्वर : एक परिचय (1970 से अद्यतन)

तृतीय अध्याय :– **अरुण कमल के काव्य में स्थानीयता के स्वर**

1. अरुण कमल का संक्षिप्त जीवन वृत्त

1.1 अरुण कमल के काव्य की पृष्ठभूमि, परिवेश एवं वातावरण

1.2 काव्य में स्थानीय प्रभाव से सजीव सांस्कृतिक

परिदृश्य निर्माण

2. काव्य में स्थानीय प्रभाव से लोकराग एवं लोकानुभूति

2.1 संपूर्ण जीवन पद्धति

2.2 सांस्कृतिक पर्व एवं त्यौहार

2.3 लोकप्रथाएँ, लोकगीत एवं रीति–रिवाज

3. काव्य में स्थानीयता के प्रभाव से लोकोत्तर शक्तियों का स्वरूप निर्माण एवं प्रस्तुतिकरण

3.1 कर्म सिद्धान्त

3.2 धार्मिक अंध–विश्वास, देवी–देवता आदि।

4. स्थानीयता के प्रभाव से व्यापक एवं सार्थक प्रतिरोध क्षमता का विकास –

4.1 धार्मिक

4.2 राजनीतिक

4.3 सामाजिक

चतुर्थ अध्यायः– **स्थानीयता की दृष्टि से अरुण कमल एवं अन्य प्रमुख समकालीन कवियों की कविताएँ : विवेचन एवं विश्लेषण**

पंचम अध्यायः– **अरुण कमल के काव्य में स्थानीय प्रभाव से युक्त शिल्प विधान का अध्ययन**

1. शब्द

2. वाक्य

3. बिंब एवं प्रतीक

4. मुहावरे लोकोक्तियाँ

उपसंहार

परिशिष्ट

1. साक्षात्कार
2. प्रश्नावली
3. आधार ग्रंथ सूची
4. सहायक ग्रंथ सूची
5. विश्वकोश एवं शब्दकोश

- शोध निर्देशिका द्वारा दिए गए सुझावों पर रूपरेखा में कुछ परिवर्तन किया जा सकता है।

<u>आधार ग्रन्थ सूची</u>

क्रम संख्या	लेखक	पुस्तक	प्रकाशन	संस्करण
1.	अरुण कमल	अपनी केवल धार	वाणी प्रकाशन	प्रथम संस्करण – 2004, द्वितीय संस्करण – 2006
2.	अरुण कमल	सबूत	वाणी प्रकाशन	प्रथम संस्करण– 1989, द्वितीय संस्करण– 1999
3.	अरुण कमल	नये इलाके में	वाणी प्रकाशन	प्रथम संस्करण– 1996 द्वितीय संस्करण– 1999 तृतीय संस्करण– 2007
4.	अरुण कमल	पुतली में संसार	वाणी प्रकाशन	प्रथम संस्करण– 2004
5.	अरुण कमल	मैं वो शंख महाशंख	राजकमल प्रकाशन	प्रथम संस्करण– 2012
6.	अरुण कमल	कवि ने कहा	किताबघर प्रकाशन	प्रथम संस्करण– 2012
7.	अरुण कमल	प्रतिनिधि कविताएँ	राजकमल प्रकाशन	प्रथम संस्करण– 2013
8.	अरुण कमल	नई सदी के लिए चयन : पचास कविताएँ।	वाणी प्रकाशन	प्रथम संस्करण– 2011

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क्रम संख्या	लेखक	पुस्तक	प्रकाशन	संस्करण
1.	अरुण कमल	गोलमेज	वाणी प्रकाशन	प्रथम संस्करण–2009
2.	अरुण कमल	कथोपकथन	वाणी प्रकाशन	प्रथम संस्करण–2009
3.	अरुण कमल	कविता और समय	वाणी प्रकाशन	प्रथम संस्करण–2002
4.	राजेश जोशी	एक कवि की नोटबुक	राजकमल प्रकाशन	2012
5.	नंद किशोर नवल	समकालीन काव्य यात्रा	राजकमल प्रकाशन	प्रथम संस्करण–2004
6.	रामविलास शर्मा	परंपरा का मूल्यांकन	राजकमल प्रकाशन	2004
7.	न्गुगी थ्योंगो	भाषा संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता	प्रकाशन संस्थान	1994
8.	श्याम कश्यप, कमला प्रसाद, खगेंद्र ठाकुर	हिन्दी की प्रगतिशील आलोचना	राधाकृष्ण पब्लिकेशन्स	1986
9.	श्यामाचरण दुबे	परंपरा, इतिहासबोध और संस्कृति	राधाकृष्ण पब्लिकेशन्स	1991

10.	श्यामाचरण दुबे	भारतीय समाज	नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया	जनवरी 1, 2005
11.	जवाहर सिंह	हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्प विधि	नेशनल पब्लिशिंग हाउस	प्रथम – 1986
12.	देवेश ठाकुर	मैला आँचल की रचना प्रक्रिया	वाणी प्रकाशन	प्रथम – 1987
13.	रोहिताश्व	काव्य सृजन और शिल्प विधान	लोकभारती प्रकाशन	प्रथम – 2006
14.	डॉ. केशोराम शर्मा	लोककवि पण्डित देबीदत्त	शिवहरि प्रकाशन	प्रथम संस्करण – 2006
15.	डॉ. माधवेन्द्र प्रसाद	सौन्दर्यबोध और हिन्दी नवगीत	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	प्रथम – 2001
16.	डॉ. महावीर वत्स	साठोत्तरी कविता में सांस्कृतिक चेतना	संजय प्रकाशन	प्रथम – 1996
17.	पूरनचंद जोशी	अवधारणाओं का संकट	राधाकृष्ण पब्लिकेशन्स	प्रथम – 1994

पत्र–पत्रिकाओं की सूची

क्रम संख्या	सम्पादक	पत्रिका	प्रकाशन	संस्करण
1.	नामवर सिंह	आलोचना	राजकमल प्रकाशन	2005
2.	पी. एन. सिंह	समकालीन सोच	गाजीपुर	2012
3.	अरुण तिवारी	प्रेरणा	भोपाल	2011
4.	के. पी. प्रमीला	संवेद	दिल्ली	अगस्त, 2007
5.	अखिलेश	तद्भव	लखनऊ	अक्तूबर, 2012
6.	अखिलेश	तद्भव	लखनऊ	अप्रैल, 2013
7.	अरुण कमल	आलोचना	राजकमल प्रकाशन	अप्रैल–जून, 2012
8.	अरुण कमल	आलोचना	राजकमल प्रकाशन	जनवरी–मार्च, 2013
9.	अरुण कमल	आलोचना	राजकमल प्रकाशन	अप्रैल–जून, 2013